इकाई 2 मनोविज्ञान की प्रवृत्ति और क्षेत्र*

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 परिचय

2.2 मनोविज्ञानः इसका अन्य क्षेत्रों / विज्ञानों से संबंध है

2.3 मनोविज्ञान की प्रवृत्ति और उसके क्षेत्र

2.3.1 मनोविज्ञान का प्रारंभिक विभाजन

2.3.2 मनोविज्ञान के उपक्षेत्र

2.3.2.1 जैव मनोविज्ञान

2.3.2.2 संज्ञानात्मक मनोविज्ञान

2.3.2.3 तुलनात्मक मनोविज्ञान

2.3.2.4 सांस्कृतिक मनोविज्ञान

2.3.2.5 प्रायोगिक मनोविज्ञान

2.3.2.6 लैंगिक मनोविज्ञान

2.3.2.7 अधिगम मनोविज्ञान

2.3.2.8 व्यक्तित्व मनोविज्ञान

2.3.2.9 शरीर क्रिया शारीरिक मनोविज्ञान

2.3.2.10 संवेदना और प्रत्यक्षण मनोविज्ञान

2.3.2.11 सामाजिक मनोविज्ञान

2.3.2.12 नैदानिक मनोविज्ञान

2.3.2.13 सामुदायिक मनोविज्ञान

2.3.2.14 उपभोक्ता मनोविज्ञान

2.3.2.15 परामर्श मनोविज्ञान

2.3.2.16 शैक्षिक मनोविज्ञान

2.3.2.17 एर्गोनॉमिक्स मनोविज्ञान

2.3.2.18 औद्योगिक मनोविज्ञान

2.3.2.19 चिकित्सा मनोविज्ञान

2.3.2.20 फोरेंसिक मनोविज्ञान

2.3.2.21 सैन्य मनोविज्ञान

2.3.2.22 पर्यावरण मनोविज्ञान

2.3.2.23 खेल मनोविज्ञान

2.4 भारत में मनोविज्ञानः पारंपरिक और आधुनिक

2.5 सार-संक्षेप

2.6 इकाई अंत प्रश्न

2.7 शब्दावली

2.8 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

2.9 संदर्भ और सुझाव पाठन

*प्रो. अमूल्य खुराना, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, IIT दिल्ली (BPC-001, ब्लॉक से अनुकूलित)

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न कार्य में सक्षम होंगेः

- मनोविज्ञान के अन्य विज्ञानों के संबंध पर चर्चा कर सकेंगे;
- मनोविज्ञान के प्रारंभिक विभाजन का वर्णन कर सकेंगे;
- मनोविज्ञान के विभिन्न उपक्षेत्रों का वर्णन कर सकेंगे; तथा
- भारतीय संदर्भ में मनोविज्ञान के शोधों को प्रस्तुत कर सकेंगे।

2.1 परिचय

पिछले अध्याय में, हमने मनोविज्ञान की परिभाषा, इसके विकास और विज्ञान के रूप में इसकी प्रकृति पर चर्चा की। अब इस अध्याय में हम एक विषय के रूप में मनोविज्ञान पर अपनी चर्चा का विस्तार करेंगे। हम मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों और उप–क्षेत्रों पर चर्चा करेंगे और देखेंगे कि वे कैसे अंतर–संबंधित हैं। इसके अलावा, एक विषय के रूप में, भारत में मनोविज्ञान के विकास पर चर्चा की जाएगी।

2.2 मनोविज्ञानः इसका अन्य क्षेत्रों/विज्ञानों से संबंध है

आप पिछले अनुभाग में सीख चुके हैं। कि व्यवहार विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान अन्य भौतिकीय और जैविक विज्ञानों के साथ समान गुणों को साझा करता है। सभी विज्ञान व्यावहारिक अनुप्रयोग के द्वार मानवीय समस्याओं को हल करके उनके जीवन स्तर में सुधार लाने का कार्य करते हैं। भौतिकी, रसायन और गणित के परिणामों से इंजीनियरिंग और प्रौ ाोगिकी का विकास हुआ है जिन्होंने जीवन को आसान और आरामदायक बना दिया हैं। इसी तरह, चिकित्सा विज्ञान ने न केवल कई घातक बीमारियों से लड़ने और उनके नियंत्रणध्उन्मूलन बल्कि कई गंभीर बीमारियों के इलाज/रोकथाम में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। इसी तरह, मनोवैज्ञानिकों ने भी कई तकनीकों का विकास किया है, जिससे लोग अपने मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को सुधार/प्रोत्साहित कर के एक खुशहाल जीवन जी सके। मनोवैज्ञानिक भी कई प्रकार की मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक समस्याओं (व्यवहार विकारों) को रोकने और उनका इलाज करने में मदद करते हैं। कभी–कभी, दुनिया की समस्याएं जैसे कि जलवायु परिवर्तन, प्रदूशण, प्राकृतिक आपदा के बाद, मानव निर्मित आपदाएँ आदि इतनी व्यापक और गंभीर होती हैं। कि कोई भी एक या दो विज्ञान के विषय ऐसी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकतें हैं। विभिन्न क्षेत्रों के वैज्ञानिकों को मिलकर, समूहिक रूप से ऐसी समस्याओं को निपटना होगा। इसे 'ट्रांजैक्सनलिस्म' के रूप में जाना जाता है (रश, 1972)। विभिन्न विषयों के परिणामों की पारस्परिक अंतःक्रिया के फलस्वरूप ज्ञान के नए क्षेत्रों का उद्भव हुआ हैं। बायोफिजिक्स, बायोकेमिस्ट्री, जियोफिजिक्स इत्यादि ऐसे विषयों के उदाहरण हैं।

विकास के कई वर्षों में एक विशेष विज्ञान, या कभी–कभी एक से अधिक विषयों के विकास ने अन्य विज्ञान के विकास को भी प्रभावित किया हैं। इस प्रकार, विज्ञान का कोई विशेष क्षेत्र, विज्ञान के अन्य क्षेत्रों से पूरी तरह से अलग नहीं हो सकता है, और वैज्ञानिक ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में काफी निकट सम्बंध हैं। यह स्पष्ट है कि मनोविज्ञान वैज्ञानिक शोध के एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में उभरा है, परन्तु इसका विज्ञान के अन्य क्षेत्रों के साथ बहुत घनिष्ठ संबंध हैं। वास्तव में, एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान का उद्भव बहुत हद तक आनुवांषिकी, शरीर क्रिया विज्ञान, न्यूरोलॉजी, चिकित्सा, भौतिकी, रसायन विज्ञान, साइबरनेटिक्स

और अन्य विज्ञानों में विकास के कारण संभव हुआ हैं। इसके जांच और विश्लेषण के तरीके और साथ ही इसके अनुप्रयोग भी अन्य वैज्ञानिक विषयों के विकास से प्रभावित हुए हैं। बेषक, मनोविज्ञान के विकास के कारण समाजशास्त्र, मानवविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, प्रबंधन आदि जैसे अन्य विषयों का विकास को प्रभावित हुआ हैं। यह स्पष्ट है कि, भले ही हम विभिन्न क्षेत्रों के वैज्ञानिक ज्ञान के बारे में विचार कर सकते हैं, परन्तु तथ्य ये है कि इन सभी क्षेत्रों का विस्तार अन्य विषयों के शोध निश्कर्शों पर निर्भर हैं। मुमकिन है कि, यह और स्पष्ट हो जाएगा, अगर हम कुछ अन्य विज्ञान के विषयों के साथ मनोविज्ञान के संबंध की गहनता से जांच करें तो। इस उद्देश्य के लिए, हम अन्य विज्ञान के विषयों को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत कर सकते हैं।: जैविक विज्ञान, भौतिक विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और सामाजिक विज्ञान (परमेस्वरन और बीना,2002)।

2.3 मनोविज्ञान की प्रवृत्ति और उसके क्षेत्र

जैसा कि आपको पहले बताया गया है कि, मनोविज्ञान एक विज्ञान है जो मानव व्यवहार को परिस्थितियों के संदर्भ के साथ–साथ अन्य व्यक्तियों के परिपेक्ष्य में भी अध्ययन करता हैं। प्रेक्षण और अधिगम (सीखने) की मदद से, मनोविज्ञान किसी विशेष स्थिति में, किसी व्यक्ति द्वारा किए गए किसी विशिष्ट व्यवहार के कारणों का पता लगाने की कोशिश करता हैं। मोटे तौर पर, सभी विज्ञानों की दो शाखाएँ होती हैं। एक, मूल या अकादमिक शाखा और दूसरा, अनुप्रयुक्त या एप्लाइड शाखा। मूल या अकादमिक शाखा का विकास अकादमिक जिज्ञासा या एक प्रश्न का परिणाम है, जैसे न्यूटन ने पूछा ''सेब जमीन पर ही क्यों गिरता है?'' इस प्रश्न ने ही 'गुरुत्वाकर्शण' के सिद्धांत को जन्म दिया। दूसरी ओर एप्लाइड शाखा, अकादमिक शाखा के शोध से प्राप्त आकड़ों का प्रयोग करके व्यावहारिक।दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने की विधा हैं। हालांकि, यह अंतर बहुत स्पष्ट नहीं है, और एक बिंदु से परे, दोनों शाखा आपस में मिल जाती हैं। उदाहरण के लिए, अकादमिक शाखा के कई सिद्धांत ऐप्लाइड होते हैं, या कई सिद्धांतों में समस्याओं को हल करने के लिए ऐप्लाइड के तौर पर इस्तेमाल होने की क्षमता होती हैं। इसी तरह, कई ऐप्लाइड शाखाएं नए या पूरक सिद्धांतों को जन्म दिया, जिन्हें अकादमिक शाखा में शामिल किया गया हैं। परमेस्वरन और बीना (1988) के अनुसार, मनोविज्ञान को मोटे तौर पर सामान्य मनोविज्ञान और विभेदक मनोविज्ञान में वर्गीकृत किया जा सकता हैं। जहाँ पूर्व का संबंध विशेष रूप से सामान्य वयस्कों में सामान्य व्यवहार और व्यवहारों में समानता की जांच से होता है, जबकि विभेदक मनोविज्ञान मुख्य रूप से व्यक्तिगत भिन्नताओं के प्रेक्षण, मापन और स्पष्टीकरण से संबंधित हैं। धीरे–धीरे, ये दो व्यापक विभाजन सामान्य मनोविज्ञान और अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान के आगे की शाखाओं या खंडों में विकसित हुए।

2.3.1 मनोविज्ञान का प्रारंभिक विभाजन

अन्य विज्ञानों की तरह, मनोविज्ञान भी बुनियादी शाखाओं से शुरू हुआ, जिन्हें निम्न रूप में वर्गीकृत किया गया: प्रायोगिक और गैर–प्रायोगिक । प्रायोगिक शाखा की शुरूआत शारीरिक क्रिया, अधिगम (सीखने) और प्रत्यक्षण प्रक्रियाओं के क्षेत्र में शोध अध्ययनों के साथ शुरू हुई। कई मनोवैज्ञानिक व्यवहार के आधारभूत / मूल कारणों को समझने का प्रयास करते हैं। और इस प्रकार के प्रयास व्यावहारिक समस्याओं को हल करने के लिए सीधे तौर पर प्रयोग नहीं किये जा सकते हैं। वे मुख्य रूप से बुनियादी अनुसंधान में लगे हुए हैं, और प्रायोगिक विधि का उपयोग करके मौलिक प्रक्रियाओं जैसे कि अधिगम, स्मृति, सोच, संवेदना और प्रत्यक्षण, प्रेरणा और संवेग का अध्ययन करते हैं। इस प्रकार, प्रायोगिक मनोवैज्ञानिक यह जांचता है कि, व्यवहार को कैसे परिमार्जित किया जा सकता है और लोग

इन परिमार्जन को कैसे बनाए रखते हैं, चिंतन में सूचना के प्रसंस्करण, मानव संवेदी प्रणाली कैसे लोगों को उनके आसपास क्या हो रहा है का अनुभव करने की अनुमति देने के लिए काम करती है ऐसे कारक जो व्यवहार को प्रेरित करते हैं। और दिशा देते हैं।

गैर–प्रयोगात्मक शाखा में व्यक्तित्व, सामाजिक और विकासात्मक प्रक्रियाओं का अध्ययन शामिल हैं। हालाँकि, इनमें से कई अकादमिक शाखाओं की आगे उप–शाखाएँ हैं, यानी विकासात्मक मनोविज्ञान में बाल मनोविज्ञान, किशोरावस्था मनोविज्ञान और जेरोन्टोलॉजी जैसी उप–शाखाएँ हैं। इसी तरह, सामाजिक मनोविज्ञान की एक 'अनुप्रयुक्त सामाजिक मनोविज्ञान (एप्लाइड सोशल सायकॉलजी)' शाखा है और इससे 'संगठनात्मक मनोविज्ञान' नामक एक एप्लाइड क्षेत्र को जन्म दिया। एप्लाइड फील्ड ने कई सिद्धांतों को भी जन्म दिया है, जैसे प्रेरणा के सिद्धांतों को संगठनों में प्रयोग करने के परिणामस्वरूप कई कार्य प्रेरणा सिद्धांत प्रतिपादित हुए हैं।

2.3.2 मनोविज्ञान के उपक्षेत्र

जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है कि मनोविज्ञान की कई शाखाएं हैं, जिन्हें अकादमिक और एप्लाइड दोनों शाखाओं के तहत वर्गीकृत किया गया हैं। बहुत से लेखक 'शाखा' और 'क्षेत्र' को एक दूसरे के पर्याय के तौर पर उपयोग करते हैं। शाखा व्यापक शब्द प्रतीत होते हैं। जिनमें अकादमिक और एप्लाइड दोनों पहलू शामिल होते हैं, जबकि, क्षेत्र का अर्थ विशिष्ट क्षेत्र है, जहां समस्याओं को हल करने के लिए विशेषज्ञता या विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती हैं। हालाँकि, कुछ लेखक 'क्षेत्र' शब्द का व्यापक रूप में उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए 'मनोविज्ञान के क्षेत्र' में कई उप क्षेत्र हैं। अन्य लोग मनोविज्ञान में 'खंड' और 'उप–खंड' शब्द का उपयोग करते हैं। साफ तौर पर अंतर स्पष्ट नहीं हैं। इसलिए, इन शब्दों का प्रयोग पर्याय के तौर पर किया जाता हैं। मनोविज्ञान के उप–क्षेत्रों ने विभिन्न अन्य विषयों और क्षेत्रों में मनोविज्ञान की व्यापकता को बढ़ा दिया हैं। मनोविज्ञान के निहितार्थों के कारण कई अन्य उप–क्षेत्रों का उद्‌भव हुआ हैं। यह रोजगार, उ|ोग, शिक्षा और व्यक्तित्व विकास जैसे विभिन्न क्षेत्रों में लागू किए जाते हैं। इससे एक ऐसे उपक्षेत्र का भी उद्‌भव हुआ है जो व्यक्तियों की मानसिक और भावनात्मक समस्याओं का अध्ययन और आँकलन करता हैं। मनोविज्ञान की व्यापक्ता निम्न उप–क्षेत्रों के तहत समझा जा सकता है:

2.3.2.1 जैव–मनोविज्ञान

यह शाखा व्यवहार के जैविक आधारों से संबंधित हैं। मनोविज्ञान और जीव–विज्ञान के बीच अंतरंग संबंध काफी स्पष्ट हैं। सभी व्यवहार शारीरिक प्रक्रियाओं के माध्यम से होते हैं। मस्तिष्क शरीर के विभिन्न अंगों के कार्यों के समन्वय और संगठन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। वास्तव में, यह सभी प्रकार के जटिल व्यवहार का केंद्र हैं। आनुवंशिकी, जीव विज्ञान की एक शाखा है जो विरासत में मिलने वाले विभिन्न प्रकृतिक गुणों से संबंधित है, मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से भी अनुवंशिकी एक महत्वपूर्ण विज्ञान हैं। वर्षों से, आनुवंशिकीविदों ने महत्वपूर्ण शोध किए हैं, जो व्यवहार के निर्धारण में आनुवंशिकता की भूमिका को सामने लाते हैं। ये शोध विशेष रूप से असामान्य व्यवहार जैसे न्यूरोसिस, मानसिक मंदता, मनोविकार आदि क्षेत्रों में किया गया हैं। आनुवंशिकता के शोध अध्ययनों ने भी बुद्धि स्तर के निर्धारण में जीन की महत्वपूर्ण भूमिका को इंगित किया हैं। हाल के वर्षों में, अंतःस्रावी ग्रंथियों द्वारा स्रावित किए जाने वाले रासायनिक कारकों की, विशेष रूप से हार्मोन की भूमिका, व्यवहार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए दिखाई गई हैं। अंतःस्रावी ग्रंथियों के हार्मोन से भावनात्मक व्यवहार, स्वभाव आदि काफी हद तक प्रभावित होते हैं।

2.3.2.2 संज्ञानात्मक मनोविज्ञान

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान मानव की सूचना प्रसंस्करण क्षमताओं से संबंधित हैं। इस क्षेत्र के मनोवैज्ञानिक संज्ञान के सभी आयामों का अध्ययन करते हैं। जैसे कि स्मृति, सोच, समस्या का समाधान, निर्णय लेने, भाषा, और तर्क इत्यादि।

2.3.2.3 तुलनात्मक मनोविज्ञान

यह शाखा विभिन्न प्रजातियों, मुख्य तौर पर जानवरों के व्यवहार का अध्ययन और तुलना करता हैं। इसीलिए कुछ लेखक इस क्षेत्र को पशु मनोविज्ञान भी कहते थे। जानवरों के व्यवहार का अध्ययन करके, ये मनोवैज्ञानिक महत्वपूर्ण जानकारी एकत्र करते हैं। जिनकी तुलना मानव व्यवहार के साथ की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, रानी मधुमक्खी निर्देशन, नियंत्रण और श्रमिक मधुमक्खियों द्वारा की गई चीजों को कैसे प्राप्त करती है, इसकी जांच करना नेतृत्व के लिए सार्थक जानकारी प्रदान करता हैं।

2.3.2.4 सांस्कृतिक मनोविज्ञान

यह शाखा उन तरीकों का अध्ययन करती है जिनमें संस्कृति, उपसंस्कृति और जातीय समूह सदस्यता किस प्रकार से मानव व्यवहार को प्रभावित करती हैं। मनोवैज्ञानिक, अंतर सांस्कृतिक अनुसंधान करते हैं जो विभिन्न देशों के विभिन्न संस्कृतियों का लोगों के व्यवहार पर क्या असर पड़ता उसकी तुलना करते हैं।

2.3.2.5 प्रायोगिक मनोविज्ञान

यह क्षेत्र प्रत्यक्षण, अधिगम (सीखने) और अभिप्रेरणा जैसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के सभी पक्षों की जांच करता हैं। इस क्षेत्र में प्रमुख अनुसंधान विधि के तौर पर नियंत्रित प्रयोग का इस्तेमाल किया जाता हैं। मॉर्गन एट. आल. (1986) ने उल्लेख किया कि प्रायोगिक पद्धति का प्रयोग प्रयोगात्मक मनोवैज्ञानिकों के अलावा अन्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा भी किया जाता हैं। उदाहरण के लिए, सामाजिक मनोवैज्ञानिक किसी व्यक्ति के व्यवहार पर विभिन्न समूह दबावों और प्रभावों को निर्धारित करने के लिए प्रयोग कर सकते हैं। तो, इसके नाम के बावजूद, यह वो विधि नहीं है जो प्रयोगात्मक मनोविज्ञान को अन्य उप–क्षेत्रों से अलग करती हैं। इसके बजाय, प्रायोगिक मनोविज्ञान को दूसरे उप–क्षेत्रों इस बात से अलग किया जाता है कि वह क्या अध्ययन करता है – जैसे कि अधिगम की मूलभूत प्रक्रियाएँ, स्मृति, चिंतन, संवेदना और प्रत्यक्षण, प्रेरणा, अनुभूति और कुछ परिस्थितियों में व्यवहार के शारीरिक या जैविक आधार।

2.3.2.6 लैंगिक मनोविज्ञान

यह क्षेत्र पुरुषों और महिलाओं पर किए गए शोधों के आधार पर लैंगिक भूमिकाओं और प्रभावों का अध्ययन करता हैं। यह पूरे जीवन में लिंग पहचान, और लैंगिक भूमिकाओं के विश्लेषण का प्रयास करता हैं।

2.3.2.7 अधिगम का मनोविज्ञान

अधिगम मनोविज्ञान का उप–क्षेत्र यह अध्ययन करता है कि, अधिगम कैसे और क्यों होता हैं। इस क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक अधिगम की सिद्धांत विकसित करते हैं और विभिन्न मानवीय समस्याओं को हल करने के लिए अधिगम के नियमों और सिद्धांतों को लागू करते हैं।

2.3.2.8 व्यक्तित्व मनोविज्ञान

व्यक्तित्व मनोविज्ञान का क्षेत्र मानव व्यक्तित्व के लक्षणों और उसकी गत्यात्मकता का अध्ययन करता हैं। इस क्षेत्र के मनोवैज्ञानिक, व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों का आँकलन करने के लिए व्यक्तित्व परीक्षणों और व्यक्तित्व के सिद्धांतों का विकास करते हैं। वे व्यक्तित्व विकास से संबंधित समस्याओं के कारणों की भी पहचान करते हैं।

2.3.2.9 शरीर क्रिया/शारीरिक मनोविज्ञान

हम जो करते हैं, महसूस करते हैं, या सोचते हैं, उसको समझने के लिए शरीर क्रिया मनोवैज्ञानिक हमारे तंत्रिका तंत्र और शरीर के भीतर जैव रासायनिक परिवर्तनों की भूमिका की जांच करते हैं। वे अधिकतर प्रायोगिक प्रविधि का उपयोग करते हैं। और मस्तिष्क, तंत्रिका तंत्र और व्यवहार के अन्य शारीरिक स्त्रोतों पर मौलिक शोध करते हैं। शरीर क्रिया मनोविज्ञान न केवल मनोविज्ञान का एक हिस्सा है, बल्कि तंत्रिका जीव विज्ञान नामक व्यापक क्षेत्र का भी हिस्सा माना जाता है जो तंत्रिका तंत्र और इसके कार्यों का अध्ययन करता हैं।

2.3.2.10 संवेदना और प्रत्यक्षण मनोविज्ञान

यह क्षेत्र संवेदी अंगों और प्रत्यक्षण की प्रक्रिया के बारे में अध्ययन करता हैं। इस क्षेत्र में काम करने वाले मनोवैज्ञानिक संवेदना के क्रिया–विधि की जांच करते हैं और प्रत्यक्षण या गलत प्रत्यक्षण (भ्रम) के सिद्धांतों को विकसित करने में मदद करते हैं। वे यह भी अध्ययन करते हैं कि हम गहराई की गति को कैसे देखते हैं। और प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में व्यक्तिगत अंतर कैसे उत्पन्न होता हैं। इस क्षेत्र के शोधों ने कई नियमों और सिद्धांतों को जन्म दिया है जिससे हमें उन तरीकों को समझने में मदद मिली हैं, जिन्हें हम दिखने वाली दुनिया में सार्थक तरीके से समायोजित करते हैं।

2.3.2.11 सामाजिक मनोविज्ञान

सामाजिक मनोविज्ञान का क्षेत्र दृष्टिकोण, अनुरूपता, अनुनय, पूर्वाग्रह, मित्रता, आक्रामकता और मदद सहित मानव सामाजिक व्यवहार की जांच करने में मदद करता हैं। यह सामाजिक व्यवहार के सभी पहलुओं पर जोर देता है जैसे कि हम कैसे सोचते हैं और दूसरों के साथ बातचीत करते हैं, हम कैसे प्रभावित करते हैं। और दूसरों से प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए, सामाजिक मनोवैज्ञानिक अध्ययन करते हैं। कि हम दूसरों को कैसे देखते हैं। और उन धारणाओं का समाज में उनके प्रति दृष्टिकोण और व्यवहार को कैसे प्रभावित करता हैं। इस क्षेत्र का विकास समाजषास्त्रियों और सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के संयुक्त योगदान और उनके अनुसंधान के हित में हुआ हैं। हालांकि, उनका ध्यान इस मायने में अलग है कि जहां समाजशास्त्री मुख्य रूप से सामाजिक संस्थानों के साथ संबंध रखते हैं, और सामाजिक मनोविज्ञान आमतौर पर व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक इस क्षेत्र के लागू पक्ष पर काम करते हैं, एक सामाजिक संदर्भ में व्यक्ति के दृष्टिकोण और राय को मापने के लिए मानकीकृत तकनीकें विकसित करते हैं। उनका सर्वेक्षण अनुसंधान राजनीतिक राय, उपभोक्ता दृष्टिकोण और महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों से संबंधित दृष्टिकोण पर अध्ययन करता हैं। यह राजनेताओं, व्यावसायिक अधिकारियों और समुदाय के नेताओं को महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, जिन्हें निर्णय लेते समय इनसे लाभ मिलता हैं।

2.3.2.12 नैदानिक मनोविज्ञान

यह क्षेत्र गंभीर मनोवैज्ञानिक विकारों और भावनात्मक परेषानियों के निदान, कारणों और उपचार पर जोर देता हैं। नैदानिक मनोविज्ञान और मनोरोग के क्षेत्रों के बीच भ्रम होता है क्योंकि नैदानिक मनोवैज्ञानिक और मनोरोग विशेषज्ञ या मनोचिकित्सक दोनों मनोचिकित्सा प्रदान करते हैं। दोनों आमतौर पर कई अस्पतालों/क्लीनिकों में एक साथ काम करते हैं। इसीलिए कई लोग दोनों के बीच के अंतर को लेकर भ्रमित हो जाते हैं। खैर, ये पेशेवरों के दो अलग–अलग समूहों से संबंधित हैं, और उनकी शैक्षिक पृष्ठभूमि के साथ ही निदान और उपचार के तरीके भी भिन्न हैं। मनोचिकित्सक जहाँ चिकित्सक हैं। चिकित्सा अध्ययन पूरा करने के बाद, वे मानसिक रोगों की चिकित्सा (Psychiatry) में डॉक्टर ऑफ मेडिसिन (एमडी) करते हैं और मानसिक विकारों के उपचार में विशेषज्ञ होते हैं, जबकि, नैदानिक मनोवैज्ञानिक एक मास्टरस की डिग्री MA / M-Sc और / या एक डॉक्टरेट डिग्री (डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी [Ph-D-] रखते हैं) या मनोविज्ञान के डॉक्टर [Psy-D]) नैदानिक मनोविज्ञान कि डिग्री रखते हैं।

प्रशिक्षण में इस अंतर के कारण, नैदानिक मनोवैज्ञानिक जिनके पास चिकित्सा प्रशिक्षण नहीं है, वे व्यवहार विकारों के इलाज के लिए दवाओं को नहीं लिख सकते हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिक, मानसिक विकारों के निदान, उपचार और रोकथाम के बेहतर तरीकों का पता लगाने के लिए शोध करते हैं। वे इन विकारों के कारणों की पहचान करने के लिए मानकीकृत परीक्षणों पर भी बहुत निर्भर रहते हैं। व्यवहार व मानसिक विकारों के उपचार के लिए वे मनोचिकित्सकीय पद्धति का उपयोग करते हैं, जिसके लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है । लेकिन नैदानिक मनोवैज्ञानिक व्यवहार व मानसिक विकारों के इलाज के लिए दवाओं को लिखने के लिए अधिकृत नहीं हैं क्योंकि उनके पास चिकित्सा प्रशिक्षण नहीं होती हैं।

2.3.2.13 सामुदायिक मनोविज्ञान

अनुसंधान, रोकथाम, शिक्षा और परामर्श के माध्यम से, यह क्षेत्र सामुदायिक–क्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम लागू करता हैं। सामुदायिक मनोवैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं, विचारों और दृष्टिकोणों का प्रयोग करते हैं जो सामाजिक समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं और व्यक्तियों को उनके काम, और रहने वाले समूहों के समायोजन में मदद करते हैं। कुछ सामुदायिक मनोवैज्ञानिक अनिवार्य रूप से नैदानिक मनोवैज्ञानिक होते हैं, और वे समुदाय में उन लोगों तक पहुंचने के लिए विशेष रूप से कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, जिन्हें व्यवहार संबंधी समस्याएं हैं, या जिन्हें इस तरह की समस्याएं होने की संभावनायें हैं। ये मनोवैज्ञानिक न केवल सामुदायिक सदस्यों के मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से निपटते हैं बल्कि उनके साथ–साथ उनकी देखभाल करने वालों के मानसिक स्वास्थ्य को भी बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं। अन्य समुदाय मनोवैज्ञानिक समुदाय की समस्याओं को हल करने के लिए व्यवहार विज्ञान के विचारों को अधिकाधिक इस्तेमाल करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। उन्हें 'सामाजिक–समस्या समुदाय मनोवैज्ञानिक' कहा जा सकता हैं। उदाहरण के तौर पर, समुदाय में समूहों के बीच दुश्मनी, पुलिस और समुदाय के सदस्यों के बीच खराब संबंध ा, या रोजगार के अवसरों की कमी के कारण संकट, जैसी समस्याओं पर सामाजिक–समस्या समुदाय मनोवैज्ञानिक काम करते हैं। इस तरह के मनोवैज्ञानिक अक्सर समुदाय के निर्णयों में भाग लेने के लिए कुछ समूहों को प्रोत्साहित करने, बच्चों के पालन–पोशण प्रथाओं को प्रभावी और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के बारे में मनोवैज्ञानिक जानकारी प्रदान करने, या स्कूलों को यह सलाह देना कि, कैसे उनके पाठ्यक्रमों को सामुदायिक सदस्यों की जरूरतों को पूरा करने वाला बनाया जाए।

2.3.2.14 उपभोक्ता मनोविज्ञान

ये क्षेत्र उत्पाद की पैकेजिंग, विज्ञापन, वितरण के तरीके, और उपभोक्ताओं के विशिष्ट गुण का अध्ययन करता हैं। यह क्षेत्र सामाजिक मनोविज्ञान की ही एक शाखा हैं।

2.3.2.15 परामर्श मनोविज्ञान

यह शाखा लोगों/व्यक्तियों को पारस्परिक समस्याओं, करियर विकल्प, मध्यम स्तरीय भावनात्मक परेषानियों या व्यवहार संबंधी समस्याओं जैसे कि अधिक मात्रा में भोजन, धीमी गति से सीखने, या एकाग्रता की कमी सहित व्यक्तिगत समस्याओं में मदद करती हैं। परामर्श मनोवैज्ञानिक किसी व्यक्ति की विशिष्ट समस्याओं में सहायता करते हैं, जैसे कि कैरियर की योजना कैसे बनाएं, अधिक प्रभावी पारस्परिक कौशल (जैसे संचार कौशल) कैसे विकसित करें। आजकल, विवाह सम्बंध विशेषज्ञ परामर्शदाता, परिवार परामर्शदाता, स्कूल परामर्शदाता, आदि हैं।

2.3.2.16 शैक्षिक मनोविज्ञान

ये क्षेत्र कक्षा की गतिशीलता, शिक्षण शैलियों और अधिगम से संबंधित है। ये मनोवैज्ञानिक शैक्षिक परीक्षण विकसित करते हैं, और शैक्षिक कार्यक्रमों का मूल्यांकन भी करते हैं। शिक्षण योजना से लेकर शिक्षण अक्षमताओं तक शिक्षा की प्रक्रिया के सभी पहलुओं की जांच करते हैं। यह शाखा अधिगम के मनोविज्ञान, और अधिगम एवं प्रेरणा के मनोवैज्ञानिक ज्ञान का इस्तेमाल करके स्कूल में पाठ्यक्रम सीखने की क्षमता बढ़ाने की व्यापक समस्या से संबंधित हैं। स्कूल मनोविज्ञान नामक एक अन्य विशेष उप–क्षेत्र को शैक्षिक मनोविज्ञान में शामिल किया जा सकता हैं।

2.3.2.17 एर्गोनॉमिक्स (Ergonomics)

यह मनोविज्ञान का एक क्षेत्र है जो मानव व्यवहार और इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकियों के अंतरसंबंध पर आधारित हैं। यह कर्मचारियों और व्यक्तियों के आराम और सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए कार्य स्थल के वातावरण, उत्पादों या प्रणालियों को डिजाइन करने और उनको प्रबंधित करने की प्रक्रिया से संबंधित हैं।

2.3.2.18 औद्योगिक/संगठनात्मक मनोविज्ञान

यह क्षेत्र कर्मचारियों के चयन एवं भर्ती, कार्य निश्पादन का मूल्यांकन, कार्य प्रेरणा और नेतृत्व से लेकर कार्य वातावरण में व्यवहार के सभी पहलुओं की जांच करता हैं। उद्योगों और संगठनों की समस्याओं से निपटने के लिए मनोविज्ञान का पहला प्रयोग बुद्धि, एवं योग्यता परीक्षणों का उपयोग करके कर्मचारियों का चयन और भर्ती करना था। आजकल, कई कंपनियां अपने कर्मचारियों के चयन के कार्यक्रमों के लिए ऐसे परीक्षणों के आधुनिक संस्करणों का उपयोग कर रही हैं। इस क्षेत्र के विशेषज्ञ, संगठन के भीतर प्रबंधन और कर्मचारी प्रशिक्षण, नेतृत्व एवं पर्यवेक्षण, संचार, प्रेरणा, समूहों के मध्य और अंतर–समूह संघर्षों से संबंधित समस्याओं के लिए भी मनोविज्ञान का इस्तेमाल करते हैं। वे काम के माहौल एवं संगठनों और कार्य परिस्थिति में मानवीय संबंधों को बेहतर बनाने के लिए कार्य के दौरान (ऑन–द–जॉब) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इन मनोवैज्ञानिकों को कभी–कभी कार्मिक मनोवैज्ञानिक भी कहा जाता हैं।

2.3.2.19 चिकित्सा मनोविज्ञान

चिकित्सा मनोविज्ञान (मेडिकल साइकोलॉजी) का क्षेत्र चिकित्सा समस्याओं के प्रबंधन के लिए मनोविज्ञान के ज्ञान का इस्तेमाल करता है, जैसे कि बीमारी का भावनात्मक प्रभाव, कैंसर के लिए स्व–जांच, दवाएं लेने में अनुपालन। इन मनोवैज्ञानिकों की नौकरी स्वास्थ्य मनोविज्ञान के हिस्से के साथ ओवरलैप होती हैं।

2.3.2.20 फोरेंसिक मनोविज्ञान

यह एक ऐसा क्षेत्र है जो मनोविज्ञान और कानून का मिश्रण या संयोजन हैं। इसमें व्यक्तियों का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन शामिल है (आमतौर पर एक गैरकानूनी कार्य या अपराध के लिए संदिग्ध)। एक फोरेंसिक मनोवैज्ञानिक विभिन्न परिस्थितियों में शामिल होकर सेवा प्रदान करते हैं, जैसे भविष्य के आपराधिक/आतंकी खतरों के आकलन के समूह में, जेल या अदालत में विशेषज्ञ गवाह के रूप में। वे व्यवहार विश्लेषण, विकास, मूल्यांकन एवं उपचार में पेशेवर रूप से माहिर होते हैं। हालांकि इन्हें कानून और आपराधिक मनोविज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त होता है, लेकिन इन्हें नैदानिक मनोविज्ञान में भी प्रशिक्षित होना पड़ता हैं। इन्हें नैदानिक मूल्यांकन, साक्षात्कार, रिपोर्ट लेखन और मजबूत मौखिक संचार जैसे कौशलों का मर्मज्ञ होने की आवश्यकता होती हैं।

2.3.2.21 सैन्य मनोविज्ञान

मनोविज्ञान की यह शाखा देश के भीतर और साथ ही साथ देश के बाहर तैनात सैन्य बलों के व्यवहार को समझने और उनका पूर्वानुमान लगाने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का इस्तेमाल करने के अध्ययन से सम्बंधित हैं। मनोवैज्ञानिक साधनों का प्रयोग सशस्त्र बलों को तनावपूर्ण स्थितियों में बेहतर ढंग से अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने में मदद करता हैं। मनोविज्ञान का ये क्षेत्र दुश्मन सेना से निपटने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों और नियमों के इस्तेमाल पर भी काम करता हैं। यह कार्य और जीवन के बीच संतुलन को बनाने के तरीके को भी दर्शाता हैं।

2.3.2.22 पर्यावरण मनोविज्ञान

मनोविज्ञान की ये शाखा मानव और उनकी भलाई के लिए बेहतर जीवन स्थितियों को बढ़ाने के लिए पर्यावरण के मुद्दों पर मनोवैज्ञानिक शोध और समस्या समाधान करते हैं। यह पर्यावरण के साथ मानव के अंतर–संबंधों पर आधारित हैं।

2.3.2.23 खेल मनोविज्ञान

खेल मनोवैज्ञानिक, खेल, एथलेटिक प्रदर्शन, व्यायाम और शारीरिक गतिविधि पर मनोविज्ञान के प्रभाव का अध्ययन हैं। यह खेल के विभिन्न पहलुओं से संबंधित है जो पेशेवर एथलीटों और प्रशिक्षकों के बीच प्रेरणा, प्रदर्शन और टीम भावना के स्तर को बढ़ा सकते हैं। यह व्यक्तियों की सकारात्मक स्वास्थ्य के संदर्भ में खेल और व्यायाम में भागीदारी की प्रासंगिकता को भी दर्शाता हैं।

2.4 भारत में मनोविज्ञानः पारंपरिक और आधुनिक

जैसा कि पहले बताया गया था, कि मनोविज्ञान पष्चिमी देशों में दर्शनशास्त्र से एक स्वतंत्र धारा के रूप में उभरा और भारत में मनोविज्ञान पर पष्चिमी विचारों और सिद्धांतों का

महत्वपूर्ण प्रभाव था। मूल रूप से भारतीय मनोविज्ञान प्राचीन भारतीय विचारों और उपदेशों पर केंद्रित हैं। परंपरागत रूप से, वेदों और महाकाव्य साहित्य जैसे दार्शनिक और धार्मिक साहित्य ने धार्मिक विचारों और दर्शन को दर्शाया है कि किसी व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों में कैसे व्यवहार करना चाहिए। वेद, योग सूत्र और भगवद गीता मानव कार्यों और समाज पर इसके प्रभाव को दर्शाते हैं।

भारत में, मनोविज्ञान को पहली बार 1916 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र विभाग में शुरु किया गया था। स्वतंत्र तौर पर मनोविज्ञान विभागों ने कार्य करना स्वतंत्रता के बाद ही शुरु किया। प्रारंभिक वर्षों के दौरान प्रायोगिक मनोविज्ञान को बहुत प्रासंगिकता दी गई थी। मनोविज्ञान के ज्ञान को बढ़ावा देने, आगे बढ़ाने और फैलाने के उद्देश्य से, भारतीय मनोवैज्ञानिक संघ की स्थापना 1924 में की गई थी, उसके एक साल बाद Indian Journal of Psychology (भारतीय मनोविज्ञान शोध-पत्रिका) ने इसका अनुसरण किया। 40 के दशक के उत्तरार्ध में भारत में अनुप्रयोगात्मक (एप्लाइड) मनोविज्ञान को महत्व मिला।

भारत में आधुनिक मनोविज्ञान का विकास भारतीय मनोवैज्ञानिकों द्वारा संवेदना और प्रत्यक्षण को समझाने के लिए विकसित सिद्धांतों के तौर पर देखा जा सकता है (उदाहरण के लिए, एक किताब इंडियन थ्योरी ऑफ परसेप्षन, द्वाराः जे० सिन्हा)। पष्चिमी मनोवैज्ञानिकों की तरह भारत में मनोवैज्ञानिकों ने भी संज्ञान के भारतीय सिद्धांतों की तलाश शुरू कर दी। 1958 में जदुनाथ सिन्हा ने एक किताब संज्ञान पर लिखी और बाद में, संवेग पर एक पुस्तक पर काम किया। आज, ओरिएंटल मनोविज्ञान, बौद्ध मनोविज्ञान, योग मनोविज्ञान तथा जैन मनोविज्ञान आधुनिक मनोवैज्ञानिक साहित्य का एक प्रमुख हिस्सा हैं। कई पष्चिमी आधारित साइकोमेट्रिक टूल को अनुकूलित किया गया है और साथ ही भारतीय उपकरणों को सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार विकसित किया गया हैं। वर्तमान में देश भर में बहुत सारे मनोवैज्ञानिक शोध भी चल रहे हैं।

स्व मूल्यांकन प्रश्न 1

निम्नलिखित रिक्त स्थान भरें:

1) _____ का क्षेत्र निदान, कारण और उपचार पर जोर देता है गंभीर मनोवैज्ञानिक विकार और भावनात्मक परेषानी।

2) मनोविज्ञान _____ से एक स्वतंत्र धारा के रूप में उभरा।

3) मिलिट्री साइकोलॉजी की शाखा के अध्ययन को संदर्भित करता है।

.....

.....

.....

.....

4) _____ अंतर मानव व्यवहार के लिए इंजीनियरिंग प्रौ ोगिकियों से संबंधित हैं।

5) खेल मनोविज्ञान मनोविज्ञान के प्रभाव का अध्ययन है पर।

.....

.....

.....

2.5 सार संक्षेप

इस खण्ड की दूसरी इकाई से यह अभिव्यक्त किया जा सकता है कि मनोविज्ञान की विशिष्ट एक प्रकृति और सम्भावनाएँ हैं। यूनिट में अन्य विषयों के साथ मनोविज्ञान के अंतर–संबंध को समझाया गया। आपको मनोविज्ञान के क्षेत्र और उपक्षेत्रों के बारे में भी पता चला। इसके अलावा, वर्तमान इकाई में मनोविज्ञान के कुछ अन्य अनुप्रयोगों पर भी चर्चा की गई।

2.6 इकाई अंत प्रश्न

1) मनोविज्ञान के विभिन्न अनुप्रयोग क्या हैं।?
2) मनोवैज्ञानिकों के कार्यों का वर्णन करें।
3) मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों पर चर्चा करें।
4) मनोविज्ञान की प्रकृति और कार्यक्षेत्र पर एक नोट लिखें
5) मनोविज्ञान के प्रारंभिक विभाजन की व्याख्या करें।
6) मनोविज्ञान के निम्नलिखित उपक्षेत्रों पर एक नोट लिखें:
   a) तुलनात्मक मनोविज्ञान
   b) सांस्कृतिक मनोविज्ञान
   c) सामाजिक मनोविज्ञान

2.7 शब्दावली

क्लिनिकल साइकोलॉजी : यह मनोविज्ञान की वह शाखा है जो मानसिक बीमारी और असामान्य व्यवहार के मूल्यांकन और उपचार से संबंधित हैं।

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान : यह मानव सूचना प्रसंस्करण क्षमताओं से संबंधित हैं। इस क्षेत्र के मनोवैज्ञानिक अनुभूति के सभी पहलुओं का अध्ययन करते हैं। जैसे कि स्मृति, सोच, समस्या समाधान, निर्णय लेने, भाषा, तर्क इत्यादि।

सामुदायिक मनोविज्ञान : क्षेत्र अनुसंधान, रोकथाम, शिक्षा और परामर्श के माध्यम से समुदाय–व्यापी मानसिक स्वास्थ्य पर लागू होता हैं। सामुदायिक मनोवैज्ञानिक मनोवैज्ञानिक समस्याओं, विचारों और दृष्टिकोणों का इस्तेमाल करते हैं। ताकि सामाजिक समस्याओं को हल करने और व्यक्तियों को उनके काम और रहने वाले समूहों के समायोजन में मदद मिल सके।

काउंसलिंग साइकोलॉजी : यह शाखा लोगों/व्यक्तियों को व्यक्तिगत समस्याओं, करियर विकल्प, मध्यम स्तरीय भावनात्मक परेषानियों या व्यवहार संबंधी समस्याओं जैसे कि अधिक खाने, धीमी गति से सीखने या एकाग्रता की कमी सहित अन्य व्यक्तिगत समस्याओं में मदद करती हैं।

एर्गोनॉमिक्स : यह एक क्षेत्र है जो मानव व्यवहार और इंजीनियरिंग प्रौ ोगिकियों के अंतर–सम्बंध पर आधारित हैं। यह कर्मचारियों और व्यक्तियों के आराम और सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए कार्य स्थान के वातावरण, उत्पादों या प्रणालियों को डिजाइन करने और प्रबंधित करने की प्रक्रिया से संबंधित हैं।

2.8 स्व मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 1

1) झूठा
2) झूठा
3) सच
4) असत्य
5) सच

स्व-मूल्यांकन प्रश्न 2

1) क्लिनिकल साइकोलॉजी
2) दर्शन
3) सैन्य सिद्धांतों के व्यवहार के साथ–साथ समझने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करना
4) एर्गोनॉमिक्स
5) खेल, एथलेटिक प्रदर्शन, व्यायाम और शारीरिक गतिविधि

2.9 संदर्भ और सुझाव पाठन

Baron, R.A.(1999). *Essentials of Psychology* (2nd edition). USA: Allyn and Bacon.

Morgan, C. T., King, R. A., Weisz, J. R. & Schopler, J. (1986). *Introduction to Psychology* (7th edition). New Delhi: Tata McGraw-Hill

Coon, D. & Mitterer, J.O.(2008). *Psychology: A Journey*. (3rd edition) Delhi (India): Thomson Wadsworth.

Parameswaran, E.G. & Beena, C. (2002). *An Invitation to Psychology*. Hyderabad, (India): Neelkamal Publications Pvt. Ltd.

Bagga, Q. L. & Singh, A. (1990). *Elemrnts of General Psychology*. New Delhi: Arya Book Depot.

Baron, R.A.(1999). *Essentials of Psychology (2nd edition)*. USA: Allyn & Bacon.

Beyer,B. K. (1995). *Critical Thinking. Bloomington*, IN: Phi Delta Kappa Educational Foundation.

Bolles,R.C. (1993). *The Story of Psychology*. Portland:Brooks/Cole Pub Co.

Ciccarelli, S.K.& Meyer, G.E.(2006). *Psychology.* Delhi (India): Pearson Education, Inc.

Clark, K. E. & Miller, G. A. (eds.) (1970). *Psychology*. Englewood Cliffs, NJ: Prentice Hall.

Coon, D. & Mitterer, J.O. (2007). *Introduction to Psychology: Gateways to Mind and Behaviour* (11th edition). Delhi (India): Thomson Wadsworth.

Coon, D. & Mitterer, J.O.(2008). *Psychology: A Journey*. (3rd edition). Delhi (India): Thomson Wadsworth.

Dandapani, S. (2004). *General Psychology*. Hyderabad (India): Neelkamal Publications Pvt. Ltd.

Das,J.P.(19980. *The Working Mind: An Introduction to Psychology*, New Delhi, Sage Publication

Eysenck, M.W.(2004). Psychology: *An International Perspective*. Psychology Press.

Feldman, R.S.(2004). *Understanding Psychology (6thedition),* New Delhi (India): Tata McGraw Hill.

Hilgard, E. R., Atkinson, R. C., & Atkinson, R.L. (1975). *Introduction to Psychology* (6th edition). New Delhi: Oxford & IBH Publishing Co.

James, W. (1890). *The Principles of Psychology*. N.Y.:Holt.

Lahey, Benjamin B. (1998). *Psychology: An Introduction*. New Delhi; Tata McGraw-Hill Publishing Company Limited.

Morgan, C. T., King, R. A., Weisz, J. R. & Schopler, J. (1986). *Introduction to Psychology* (7th edition). New Delhi: Tata McGraw-Hill.

Nairne, J.S. (2003). *Psychology: The Adaptive Mind* (3rd edition). USA:Wadsworth.

Parameswaran, E.G. & Beena, C. (1988). *Invitation to Psychology*. New Delhi: Tata McGraw-Hill Publishing Company Limited.

Parameswaran, E.G. & Beena, C. (2002). *An Invitation to Psychology*. Hyderabad (India): Neelkamal Publications Pvt. Ltd.

Rathus, S.A. (2008). *Psychology: Concepts & Connections*. (9th edition). Canada: Wadsworth.

Rush, Harold M.F.(1972).The world of work and the behavioural sciences: A perspective and an overview. In Fred Luthans (Ed.). Contemporary readings in organisational behaviour. New York. McGraw-Hill Book Company.

Schick, T. & Vaughn, L.(2001). How to think about weird things: Critical thinking for a new age. New York: McGraw-Hill.

Tavris,C. & Warde,C. (1997). *Psychology in Perspective* (2nd Ed). New York: Addison Wesley Longman, Inc.

Woodworth, R. S. (1948). *Contemporary Schools of Psychology.* New York: Ronald.

Dalal, A. K. (2011). A journey back to the roots: Psychology in India. *Foundations of Indian Psychology Volume 1: Theories and Concepts*, 27.

Jain, A. K. (2005). Psychology in India. *The Psychologist*, *18*(4), 206-208.

Misra, G., & Paranjpe, E. A. C. (2012). Psychology in modern India. In *Encyclopedia of the History of Psychological Theories* (pp. 881-892). Springer US.

Singh, A. K. (1991). *The Comprehensive History of Psychology*. Motilal Banarsidass Publication.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY